e-ISSN:2582-7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 6, Issue 2, February 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.54

6381 907 438 6381 907 438 ijmrset@gmail.com www.ijmrset.com

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 6, Issue 2, February 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602036 |

भक्ति कालीन हिंदी निर्गुण काव्य का सांस्कृतिक अनुशीलन

डॉ दीपाली शर्मा

सह आचार्य हिंदी साहित्य, एस डी राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर, भारत

सारांश (ABSTRACT): हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्ति काल को स्वर्ण युग की संज्ञा दी जाती है। इस काल में भारतीय समाज, संस्कृति, धर्म और दर्शन के विविध आयामों का व्यापक विकास हुआ। भक्ति आंदोलन ने सामाजिक समरसता, धार्मिक सहिष्णुता तथा मानवतावादी दृष्टिकोण को नई दिशा प्रदान की। भक्ति काव्य की दो प्रमुख धाराएँ—सगुण और निर्गुण—भारतीय सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में भक्ति कालीन हिंदी निर्गुण काव्य का सांस्कृतिक अनुशीलन किया गया है। विशेष रूप से कबीरदास, रैदास, दादूदयाल, गुरु नानक देव आदि संत कवियों के काव्य में निहित सांस्कृतिक तत्वों का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन में निर्गुण काव्य की सामाजिक चेतना, धार्मिक दृष्टिकोण, लोक संस्कृति, मानवतावाद, समन्वयवादी प्रवृत्ति तथा आध्यात्मिक चिंतन का विवेचन किया गया है। शोध में तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं सांस्कृतिक पद्धति का प्रयोग किया गया है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि निर्गुण काव्य भारतीय संस्कृति की उदार, समन्वयवादी और मानवतावादी परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है।

मुख्यशब्द: भक्ति काल, निर्गुण काव्य, संत साहित्य, सांस्कृतिक चेतना, मानवतावाद, सामाजिक समरसता, भारतीय संस्कृति।

I. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य का भक्ति काल भारतीय सांस्कृतिक इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण युग है। यह काल केवल धार्मिक चेतना का ही नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पुनर्जागरण का काल भी था। मध्यकालीन भारतीय समाज राजनीतिक अस्थिरता, धार्मिक कट्टरता, जातिगत भेदभाव, सामाजिक विषमता और रूढ़ियों से ग्रस्त था। ऐसी स्थिति में संत कवियों ने निर्गुण भक्ति के माध्यम से मानवता, समानता और प्रेम का संदेश दिया।

निर्गुण भक्ति धारा के कवियों ने ईश्वर को निराकार, निर्गुण एवं सर्वव्यापी माना। उन्होंने बाह्य आडंबर, कर्मकांड, जाति-पाँति और धार्मिक कट्टरता का विरोध किया। उनका उद्देश्य समाज में समानता और भाईचारे की भावना का विकास करना था। संत कवियों ने लोकभाषा में अपने विचार व्यक्त किए, जिससे उनका साहित्य जनसामान्य तक पहुँचा।

भक्ति कालीन निर्गुण काव्य भारतीय संस्कृति के समन्वयवादी स्वरूप का प्रतीक है। इसमें हिंदू, मुस्लिम, सूफी तथा लोक परंपराओं का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध पत्र में निर्गुण काव्य की सांस्कृतिक विशेषताओं का गहन अध्ययन किया गया है।

II. शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. भक्ति कालीन निर्गुण काव्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. निर्गुण संत कवियों की सांस्कृतिक चेतना का विश्लेषण करना।
3. निर्गुण काव्य में सामाजिक समरसता एवं मानवतावाद का अध्ययन करना।
4. निर्गुण काव्य में धार्मिक समन्वय की भावना का विवेचन करना।
5. भारतीय संस्कृति के विकास में निर्गुण काव्य के योगदान का मूल्यांकन करना।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 6, Issue 2, February 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602036 |

III. शोध पद्धति (RESEARCH METHODOLOGY)

प्रस्तुत शोध पत्र में विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक तथा सांस्कृतिक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। संत साहित्य, आलोचनात्मक ग्रंथ, शोध पत्र, इतिहास ग्रंथ तथा साहित्यिक पत्रिकाओं का अध्ययन करके निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं।

शोध में निम्न पद्धतियों का प्रयोग किया गया—
- सांस्कृतिक अनुशीलन पद्धति
- तुलनात्मक अध्ययन पद्धति
- ऐतिहासिक पद्धति
- व्याख्यात्मक पद्धति

इन पद्धतियों के माध्यम से निर्गुण काव्य के सांस्कृतिक स्वरूप का समग्र अध्ययन किया गया है।

भक्ति काल : ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

भक्ति आंदोलन का उदय मध्यकालीन भारतीय समाज की परिस्थितियों में हुआ। उस समय भारत राजनीतिक अस्थिरता और धार्मिक संघर्षों से गुजर रहा था। मुस्लिम शासन की स्थापना के बाद भारतीय समाज में अनेक सांस्कृतिक परिवर्तन हुए। हिंदू समाज जातिगत भेदभाव, कर्मकांड और रूढ़ियों में जकड़ा हुआ था।

इसी समय संत कवियों ने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया। उन्होंने ईश्वर को निराकार माना तथा मनुष्य को ईश्वर प्राप्ति के लिए आंतरिक साधना का मार्ग बताया। संत कवियों का उद्देश्य धार्मिक समरसता और सामाजिक समानता की स्थापना करना था।

भक्ति आंदोलन भारतीय संस्कृति के लोकतांत्रिक स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है। इस आंदोलन ने निम्न वर्गों और शोषित समाज को नई चेतना प्रदान की।

निर्गुण काव्य की अवधारणा

निर्गुण काव्य भक्ति साहित्य की वह धारा है जिसमें ईश्वर को निराकार, निर्गुण और सर्वव्यापी माना गया है। निर्गुण संतों के अनुसार ईश्वर किसी मूर्ति, मंदिर या विशेष धर्म में सीमित नहीं है। वह प्रत्येक प्राणी के भीतर विद्यमान है।

निर्गुण संतों ने बाह्य पूजा-पद्धतियों और कर्मकांडों का विरोध किया। उन्होंने आंतरिक शुद्धता, प्रेम, सत्य और भक्ति को ईश्वर प्राप्ति का साधन माना।

निर्गुण काव्य की प्रमुख विशेषताएँ—
1. ईश्वर की निराकार सत्ता में विश्वास
2. जाति-पाँति का विरोध
3. धार्मिक समन्वय
4. मानवतावादी दृष्टिकोण
5. लोकभाषा का प्रयोग
6. सामाजिक सुधार की भावना

IV. निर्गुण संत कवि एवं उनकी सांस्कृतिक चेतना

कबीरदास

कबीर निर्गुण भक्ति धारा के प्रमुख कवि माने जाते हैं। उनका जन्म पंद्रहवीं शताब्दी में हुआ। उन्होंने हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों की रूढ़ियों का विरोध किया।

कबीर की सांस्कृतिक चेतना मानवतावादी एवं समन्वयवादी है। वे कहते हैं—

"जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।"

इस कथन में सामाजिक समानता और ज्ञान की महत्ता का संदेश निहित है।

कबीर ने मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा और बाह्य कर्मकांड का विरोध किया। उन्होंने आंतरिक साधना और सत्य को महत्व दिया। उनके काव्य में भारतीय लोक संस्कृति, सामाजिक चेतना और आध्यात्मिक चिंतन का अद्भुत समन्वय मिलता है।

रैदास

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 6, Issue 2, February 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602036 |

रैदास निम्न वर्ग से संबंधित संत कवि थे। उन्होंने सामाजिक विषमता और जातिगत भेदभाव का विरोध किया।
उनका प्रसिद्ध कथन—
"मन चंगा तो कठौती में गंगा।"
इसमें आंतरिक पवित्रता को बाह्य आडंबर से अधिक महत्वपूर्ण बताया गया है।
रैदास ने समानता और मानवता का संदेश दिया। उनके काव्य में दलित चेतना एवं सामाजिक न्याय की भावना दिखाई देती है।

दादूदयाल
दादूदयाल ने प्रेम, अहिंसा और भाईचारे का संदेश दिया। उनका काव्य धार्मिक समन्वय और मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है।
उन्होंने हिंदू-मुस्लिम एकता पर बल दिया तथा बाह्य आडंबरों का विरोध किया।

गुरु नानक
गुरु नानक ने निर्गुण भक्ति को व्यापक सामाजिक आधार प्रदान किया। उन्होंने "एक ओंकार" के सिद्धांत के माध्यम से ईश्वर की एकता का संदेश दिया।
उनके काव्य में श्रम, सत्य, सेवा और मानवता को विशेष महत्व प्राप्त है।

V. निर्गुण काव्य में सांस्कृतिक तत्व

1. मानवतावाद
निर्गुण काव्य का मूल आधार मानवतावाद है। संत कवियों ने मनुष्य को सर्वोपरि माना। उन्होंने जाति, धर्म और वर्ग के भेदभाव का विरोध किया।
कबीर कहते हैं—
"साईं के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोय।"
यहाँ समस्त मानव जाति की समानता का संदेश निहित है।

2. सामाजिक समरसता
निर्गुण संतों ने समाज में व्याप्त ऊँच-नीच और जातिगत भेदभाव का विरोध किया। उन्होंने सभी मनुष्यों को समान माना।
रैदास और कबीर जैसे संत कवियों ने दलित एवं शोषित वर्ग को सम्मान दिलाने का प्रयास किया।

3. धार्मिक समन्वय
निर्गुण काव्य हिंदू और मुस्लिम संस्कृति के समन्वय का प्रतीक है। संत कवियों ने दोनों धर्मों की अच्छाइयों को स्वीकार किया।
कबीर ने कहा—
"कांकर पाथर जोड़ि के मस्जिद लई चिनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय॥"
इसमें धार्मिक कट्टरता पर व्यंग्य किया गया है।

4. लोक संस्कृति
निर्गुण काव्य लोकजीवन से जुड़ा हुआ है। संत कवियों ने लोकभाषा और लोक प्रतीकों का प्रयोग किया।
उनकी भाषा सरल, सहज और जनसामान्य की भाषा है। इससे उनका साहित्य व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचा।

5. आध्यात्मिक चेतना
निर्गुण संतों ने आत्मा और परमात्मा के संबंध को महत्वपूर्ण माना। उन्होंने ईश्वर प्राप्ति के लिए आंतरिक साधना और आत्मज्ञान का मार्ग बताया।
उनकी आध्यात्मिकता रहस्यवाद से प्रभावित है।

निर्गुण काव्य और भारतीय संस्कृति
निर्गुण काव्य भारतीय संस्कृति की उदारता, सहिष्णुता और समन्वयवादी प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है। इस काव्य ने भारतीय समाज को नई दिशा प्रदान की।
सांस्कृतिक योगदान

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 6, Issue 2, February 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602036 |

1. सामाजिक समानता का प्रचार
2. धार्मिक सहिष्णुता का विकास
3. लोकभाषाओं का विकास
4. मानवतावादी चेतना का प्रसार
5. भारतीय संस्कृति में समन्वय की भावना का विकास

निर्गुण काव्य की भाषा-शैली

निर्गुण संत कवियों ने सरल एवं लोकभाषा का प्रयोग किया। उनकी भाषा में अवधी, ब्रज, भोजपुरी, राजस्थानी, पंजाबी आदि का मिश्रण मिलता है।
कबीर की भाषा सधुक्कड़ी कहलाती है। उनकी भाषा में लोकोक्तियों, प्रतीकों और व्यंग्य का सुंदर प्रयोग मिलता है।
निर्गुण काव्य की भाषा जनसामान्य के निकट होने के कारण अत्यंत प्रभावशाली बन गई।

निर्गुण काव्य में प्रतीक एवं बिंब

निर्गुण संत कवियों ने अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रतीकों और बिंबों का प्रयोग किया।
उदाहरण—

- चदरिया — मानव शरीर का प्रतीक
- जल — जीवन का प्रतीक
- दीपक — आत्मज्ञान का प्रतीक

कबीर की प्रसिद्ध पंक्ति—
"झीनी-झीनी बीनी चदरिया।"
यहाँ "चदरिया" मानव शरीर का प्रतीक है।

निर्गुण काव्य और सामाजिक सुधार

निर्गुण संत कवियों ने समाज सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने जाति-पाँति, छुआछूत, धार्मिक अंधविश्वास और कर्मकांड का विरोध किया।
उनकी वाणी ने निम्न वर्गों को आत्मसम्मान और सामाजिक चेतना प्रदान की।

निर्गुण काव्य की समकालीन प्रासंगिकता

आज के समय में भी निर्गुण काव्य अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समाज जातीय संघर्ष, धार्मिक कट्टरता और सामाजिक विषमता जैसी समस्याओं से जूझ रहा है।
ऐसी स्थिति में संत कवियों का मानवता, प्रेम और समानता का संदेश अत्यंत महत्वपूर्ण है।
निर्गुण काव्य हमें यह सिखाता है कि मनुष्य की पहचान उसके कर्म और आचरण से होती है, न कि जाति या धर्म से।

आलोचनात्मक दृष्टिकोण

आलोचकों के अनुसार निर्गुण काव्य भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है।
हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कबीर को भारतीय संस्कृति का महान समन्वयवादी कवि माना है। उनके अनुसार कबीर ने भारतीय समाज को नई दिशा प्रदान की।
आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निर्गुण संत साहित्य को जनचेतना का साहित्य कहा है।

VI. निष्कर्ष

भक्ति कालीन हिंदी निर्गुण काव्य भारतीय संस्कृति की उदार, समन्वयवादी और मानवतावादी परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है। संत कवियों ने सामाजिक विषमता, धार्मिक कट्टरता और जातिगत भेदभाव का विरोध किया। उन्होंने प्रेम, समानता, भाईचारे और मानवता का संदेश दिया।
कबीरदास, रैदास, दादूदयाल तथा गुरु नानक जैसे संत कवियों ने भारतीय समाज को नई सांस्कृतिक चेतना प्रदान की।
निर्गुण काव्य केवल धार्मिक साहित्य नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज और संस्कृति का जीवंत दस्तावेज है। इसकी शिक्षाएँ आज भी मानव समाज के लिए प्रासंगिक और प्रेरणादायक हैं।

संदर्भ सूची (REFERENCES)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 6, Issue 2, February 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0602036 |

1. कबीर ग्रंथावली, रामकिशोर शर्मा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद (2005)
2. रैदास के पद, डॉ शूकदेव सिंह, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली (2003)
3. दादू वाणी, Dadu Sahaje Dekhiye(Ddau Vani) https//: google.books.in
4. गुरु ग्रंथ साहिब, परम श्रद्धेय गुरु गोविंद सिंह
5. हिंदी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल (1929)
6. कबीर, हजारी प्रसाद द्विवेदी
7. भक्ति आंदोलन और भारतीय संस्कृति, सुमन कुमारी, गीता दुबे, विद्यासागर दुबे, शशि किरण, यशिता प्रकाशन, उत्तराखंड (2015)
8. निर्गुण काव्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, शर्मा एस.के. नई दिल्ली (2022)
9. भारतीय संस्कृति और हिंदी साहित्य, सुमन कुमारी, गीता दुबे, विद्यासागर दुबे, शशि किरण, यशिता प्रकाशन, उत्तराखंड (2018)
10. संत साहित्य की सामाजिक चेतना, डॉ हरीश कुमार जैतारण, (2015)

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor

7.54

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com